Shodh Sari-An International Multidisciplinary Journal

@2024 International Council for Education Research and Training
2024, Vol. 03, Issue 01, 196-209
ISSN: 2959-1376
DOI: https://doi.org/10.59231/SARI7665

शास्त्रीय संगीत में दूरस्थ शिक्षण प्रणाली की उपयोगिता एवं चुनौतियां

सिंह, भगत

सहायक प्रोफेसर, संगीत मान्यवर कांशीराम राजकीय महाविद्यालय गाजियाबाद

सारांश

भारत में वैदिक काल से ही संगीत शिक्षा की एक महान परम्परा रही है। प्राचीन काल में गुरुकुल पद्धति से ही संगीत की शिक्षा दी जाती थी। कालांतर में मध्य युग में घराना अथवा सम्प्रदाय पद्धति अस्तित्व में आई। आज हम तक जो संगीत पहुंचा है वह मौखिक विद्या के रूप में प्रसारित होता रहा है। वर्तमान युग में प्रौद्योगिकी के विकास के साथ ही संगीत की शिक्षा में भी परिवर्तन हो रहा है। आज की बढ़ती जनसंख्या के कारण शिक्षा के क्षेत्र में प्रोद्यौगिकी के महत्व ने हमारे जीवन के विभिन्न पहलुओं में क्रांति ला दी है। संगीत जैसी गुरुमुखी कला के लिए आज के संसाधनों द्वारा सिखाया जा रहा है। देश के होनहार संगीत के विद्यार्थियों के लिए आज के युग में संगीत की शिक्षा दूरस्थ प्रणाली से सिखाना समय की आवश्यकता है। मोबाईल की क्रांति तथा इंटरनेट की सुलभता ने इसके लिए महत्वपूर्ण द्वार खोल दिये हैं। दूरस्थ प्रणाली शिक्षा की एक ऐसी पद्धति है जो भौगोलिक सीमाओं को पार करती है तथा गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उपलब्ध कराने में एक शक्तिशाली उपकरण के रूप में अस्तित्व में है। प्रस्तुत शोध पत्र में संगीत शिक्षा के क्षेत्र में दूरस्थ शिक्षा की संभावनाओं का पता लगाना है, इसके लाभों, चुनौतियों और उन तरीकों पर प्रकाश डालना है जिनसे यह संगीत के विद्यार्थियों लिए लाभकारी हो सकता है। दूरस्थ शिक्षा में संगीत शिक्षा को लोकतांत्रिक बनाने, रचनात्मकता को बढ़ावा देने और एक लचीला शिक्षण वातावरण प्रदान करने की क्षमता है। इसके द्वारा आने वाली चुनौतियों का अध्ययन करने तथा इसके सफल कार्यान्वयन के लिए उपकरणों का अध्ययन करने की आवश्यकता है। संगीत में गायन, वादन तथा नृत्य तीनों का अन्तर्भाव है। ललित कलाओं के शिक्षण में भाव, सम्वेदनशीलता, आंगिक चेष्टाएं, स्वर की बारीकियाँ तथा वाद्य वादन में बोलों की निकासी आदि में गुरु का भौतिक रूप से उपस्थित होना जरूरी है। दूरस्थ शिक्षण में गुरु की उपस्थिति की समस्या भी वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग, Zoom, youtube आदि टेक्नोलॉजी के कारण दूर हो गई है। भविष्य में

@2024 International Council for Education Research and Training 2024, Vol. 03, Issue 01, 196-209
ISSN: 2959-1376 DOI: https://doi.org/10.59231/SARI7665

संगीत में दूरस्थ शिक्षण एक आवश्यक तथा प्रभावशाली माध्यम होगा। कुछ दशकों पूर्व संगीत वाद्यों के रखरखाव तथा लाने व ले जाने में बहुत असुविधा होती थी। आजकल संगीत में डिजीटल वाद्य उपलब्ध हैं जिनकी ध्वनि गुणवत्ता भी अच्छी है तथा अपने मोबाइल या लैपटॉप में हम इनका उपयोग कर सकते हैं। डिजीटल वाद्यों के लाने व ले जाने में भी कोई दिक्कत नहीं होती है। Ishalla, Sur Sadhna, Lehara pro आदि साफ्टवेयर्स के रूप में अनेकों वादय प्ले स्टोर पर उपलब्ध हैं।

मुख्य शब्दः दूरस्थ शिक्षण प्रणाली, गुरु-शिष्य परम्परा, सूचना प्रौद्योगिकी, ई-लर्निंग, वैश्विक साझीकरण, डिजिटल वाद्य।

संगीत में दूरस्थ शिक्षण प्रणाली का ऐतिहासिक सन्दर्भ

सही मायने में दूरस्थ शिक्षा सबसे पहले 1840 के दशक में सर आइजैक पिटमैन द्वारा शुरू की गई थी जिसमें वह छात्रों को पोस्टकार्ड भेजा करते थे। उन्होंने पोस्टकार्ड पर आशुलिपिक रूप से लिखित पाठों को मेल करके और प्रूफरीडिंग के बदले छात्रों से प्रतिलेख प्राप्त करके आशुलिपि की एक प्रणाली सिखाई। भारत में दूरस्थ शिक्षा एक अपेक्षाकृत नई अवधारणा है। यूके में तो 1858 से यह अस्तित्व में है। भारत में 1960 के दशक की शुरुआत में ही दूरस्थ शिक्षा अस्तित्व में आई थी। वर्ष 1961 में, भारत में केंद्रीय शिक्षा सलाहकार बोर्ड ने दूरस्थ शिक्षा पाठ्यक्रमों की प्रकृति, दायरे और संरचना के संबंध में महत्वपूर्ण सुझाव देने के लिए डॉ॰ डी॰एस॰ कोठारी की अध्यक्षता में एक समिति की स्थापना की। भारत में पहला दूरस्थ शिक्षा केंद्र 1962 में दिल्ली विश्वविद्यालय द्वारा स्थापित किया गया था। बाद में इसका नाम बदलकर SCCCE (School of Correspondence Courses and Continuing Education) कर दिया गया। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने 2013 में दूरस्थ शिक्षा ब्यूरो की स्थापना की। ICT Tools के निरन्तर विकास के चलते संगीत शिक्षण आसान और सुलभ होता जा रहा है। व्यापक शिक्षा के रूप में दूरस्थ शिक्षा एक प्रभावशाली माध्यम है यद्यपि व्यक्तिगत रूप से यह कलाकार बनाने में सक्षम नहीं है। इसके लिए योग्य गुरु का होना अनिवार्य है। संगीत शास्त्र सम्बन्धी सामग्री व राग गायन की घराने की महत्वपूर्ण सामग्री दूरस्थ शिक्षा में सुनियोजित ढंग से हमें प्राप्त हो जाती है। दूरस्थ संगीत शिक्षण की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि काफी लंबी है। संगीत एक ऐसी कला है जिसे मौखिक

@2024 International Council for Education Research and Training
ISSN: 2959-1376
2024, Vol. 03, Issue 01, 196-209
DOI: https://doi.org/10.59231/SARI7665

परंपरा के माध्यम से भी पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ाया जाता रहा है। 19वीं शताब्दी में, दूरस्थ संगीत शिक्षण के लिए नए तरीके विकसित होने लगे। इस समय, पोस्टकार्ड, पत्रिकाओं और संगीत पत्रिकाओं जैसे नए संचार साधनों ने संगीत के नोट्स और अन्य जानकारी को दूरस्थ स्थानों पर भेजना संभव बना दिया। 19वीं शताब्दी के अंत में, अमेरिकी संगीतकार और शिक्षाविद् एडवर्ड मैकडोवेल ने अपने "मैकडोवेल मेलोडी बुक्स" के माध्यम से दूरस्थ संगीत शिक्षण को बढ़ावा दिया। इन पुस्तकों में, मैकडोवेल ने विभिन्न संगीत शैलियों की सरल मेलोडी प्रदान की, जिन्हें छात्र अपने घर पर अभ्यास कर सकते थे।

20वीं शताब्दी में, दूरस्थ संगीत शिक्षण के नए तरीके और अधिक विकसित हुए। इस समय, रेडियो, टेलीविजन और वीडियो जैसे नए प्रौद्योगिकियों ने संगीत के प्रदर्शन और शिक्षण को दूरस्थ दर्शकों तक पहुंचाया। 1950 के दशक में, अमेरिकी संगीतकार और शिक्षाविद लियोनार्ड बर्नस्टीन ने अपने "द टीवी सिम्फनी" कार्यक्रम के माध्यम से दूरस्थ संगीत शिक्षण को लोकप्रिय बनाया। इस कार्यक्रम में, बर्नस्टीन ने युवा दर्शकों को संगीत के बारे में सिखाया और उन्हें क्लासिक संगीत के प्रदर्शनों से परिचित कराया।

21वीं शताब्दी में, दूरस्थ संगीत शिक्षण ने नई ऊँचाइयों को छुआ है। इस समय, इंटरनेट और अन्य डिजिटल प्रौद्योगिकियों ने संगीत के शिक्षण को पूरी तरह से बदल दिया है। अब, छात्र दुनिया भर के शिक्षकों से ऑनलाइन संगीत सीख सकते हैं। उदाहरण के लिए, Coursera, Udemy और अन्य ऑनलाइन प्लेटफॉर्म संगीत के पाठ्यक्रम प्रदान करते हैं जो छात्रों को घर पर अपने बल पर संगीत सीखने का प्लेटफ़ॉर्म प्रदान करते हैं। दूरस्थ संगीत शिक्षण के कई लाभ हैं। यह छात्रों को अपनी पसंद के शिक्षक से सीखने की अनुमति देता है, भले ही वे भौगोलिक रूप से दूर हों। यह छात्रों को अपनी गति से सीखने की भी अनुमति देता है। दूरस्थ संगीत शिक्षण विशेष रूप से उन छात्रों के लिए फायदेमंद है जो संगीत सीखने के लिए पारंपरिक तरीकों तक पहुंचने में असमर्थ हैं, जैसे कि दूरस्थ क्षेत्रों में रहने वाले छात्र या रोजगार की मजबूरी के कारण नियमित कक्षाओं में भाग लेने में असमर्थ छात्र। दूरस्थ संगीत शिक्षण के कुछ सीमाएँ भी हैं। इनमें व्यक्तिगत निर्देश की कमी, संगीत के तकनीकी पहलुओं को सीखने में कठिनाई, और प्रेरणा बनाए रखने में कठिनाई शामिल हैं। आधुनिक युग में

@2024 International Council for Education Research and Training
ISSN: 2959-1376
2024, Vol. 03, Issue 01, 196-209
DOI: https://doi.org/10.59231/SARI7665

दूरस्थ संगीत शिक्षण एक बढ़ती हुई लोकप्रियता का तरीका है जो संगीत सीखने के लिए नए अवसर प्रदान करता है।

संगीत शिक्षण की पृष्ठभूमि

वैदिक काल में संगीत को शिक्षा के एक अंग के रूप माना गया था। वैदिक सूक्तियां व देवताओं की स्तुति हेतु संगीत का गायन होता था। उस समय, संगीत को एक पवित्र कला माना जाता था और इसका उपयोग धार्मिक अनुष्ठानों और समारोहों में किया जाता था।

मध्यकाल को संगीत शिक्षा का स्वर्ण युग कहा जा सकता है। इस काल में संगीत सम्बन्धी महान ग्रंथ लिखे गए जो आज भी भारतीय संगीत का आधार हैं। भरत के नाट्य शास्त्र से लेकर संगीत रत्नाकर तक तथा मध्यकालीन संस्कृत ग्रंथों में हमें भारतीय संगीत की महत्वपूर्ण जानकारी मिलती है। इन ग्रंथों में संगीत के सिद्धांतों, वादन और गायन की तकनीकों का वर्णन मिलता है। मुस्लिम काल में भी उत्तर भारतीय संगीत का पर्याप्त विकास हुआ। मुस्लिम कलाकारों ने अपने रियाज से इस रागदारी धरोहर को विकसित किया तथा सुरक्षित रखा। मुस्लिम कॉल में संगीत शिक्षा गुरुकुल से निकल कर हमें घरानों के रूप में मिलती है। इसे सीना ब सीना तालीम अर्थात् सामने बैठकर सिखाने वाली विद्या कहा गया। भारतीय रागदारी संगीत वैयक्तिक भावों को जाग्रत करने में सक्षम है। पश्चिमी संगीत समष्टि की ओर अग्रसर है जो सामूहिक वातावरण उत्पन्न करता है तथा इसमें वाद्यों की प्रमुखता है। भारत में संगीत को नाद ब्रहम माना गया है जो परम व्यक्तित्व की ओर ले जाता है। इसी धरातल पर इसका शिक्षण होता आया है। भारत का संगीत गायन प्रधान है। कंठ को प्राण के निकट माना गया है जो प्राणायाम के द्वारा स्व की प्राप्ति कराता है। अतः भारतीय संगीत मूलतः योगोन्मुख है।

आधुनिक काल में, संगीत शिक्षा ने एक नया रूप ले लिया है। 18वीं शताब्दी के अंत और 19वीं शताब्दी की शुरुआत में, कई संगीत विद्यालयों और संस्थानों की स्थापना हुई। इन संस्थानों में संगीत की आधुनिक तकनीकों के द्वारा भी संगीत सिखाया जाता है।

संगीत शिक्षा की वर्तमान प्रणाली को दो मुख्य भागों में विभाजित किया जा सकता है-

(i) गुरु-शिष्य परंपरा- यह पारंपरिक प्रणाली है जिसमें एक गुरु अपने शिष्य को सामने बैठाकर संगीत सिखाता है। इस प्रणाली में, शिष्य गुरु के

@2024 International Council for Education Research and Training
ISSN: 2959-1376
2024, Vol. 03, Issue 01, 196-209
DOI: https://doi.org/10.59231/SARI7665

पास जाकर सीखता है। भारत की घराना परम्परा में गुरु शिष्य परम्परा के ही दर्शन होते हैं।

(ii) संस्थागत शिक्षा- यह आधुनिक प्रणाली है जिसमें संगीत के विद्यालयों और संस्थानों में संगीत सिखाया जाता है। इस प्रणाली में, छात्रों को संगीत के विभिन्न विषयों जैसे कि स्वर, राग, ताल, वाद्य वादन और गायन की शिक्षा दी जाती है।

भारत में संगीत शिक्षा के महत्व को निम्नलिखित रूप से समझा जा सकता हैः

दूरस्थ शिक्षण प्रणाली की संगीत में उपयोगिता

(i) सांगीतिक प्रतिभायुक्त विद्यार्थियों को सीखने का अवसर- समाज के दूरदराज क्षेत्रों में जहाँ संगीत अध्यापक सुलभ नहीं है, सांगीतिक प्रतिभायुक्त बच्चे इस कला में अपने हुनर को निखार नहीं पाते हैं। ऐसे बच्चों के लिए दूरस्थ शिक्षा वरदान से कम नहीं है। ऐसे बच्चों में संगीत अधिग्रहण क्षमता अधिक होती है तथा थोड़े से मार्गदर्शन में ही आगे बढ़ जाते हैं। उनके सीखने की आधारशिला तैयार हो जाती है। आगे चलकर योग्य गुरु से वे संगीत सीख सकते हैं।

(ii) समावेशी शिक्षण वातावरण- शिक्षा का यह एक ऐसा वातावरण है जिसमें सभी वर्गों के बच्चे साथ-साथ सीखते हैं। शारीरिक रूप से अक्षम तथा अन्य समस्याओं से पीड़ित व्यक्ति भी इस शिक्षा में सम्मिलित हो जाते हैं। दूरस्थ शिक्षण प्रणाली सामान्य तथा असामान्य दोनों तरह के व्यक्तियों को शिक्षित करने का मधुर वातावरण उत्पन्न करती है। इससे विविधता और समावेशिता को बढ़ावा मिलता है।

(iii) वैश्विक सहयोग की सुविधा- आभासी कक्षाओं और ऑनलाइन मंचों के माध्यम से दूरस्थ शिक्षा छात्रों को विभिन्न सांस्कृतिक पृष्ठभूमि व्यक्तियों के साथ सहयोग करने में सक्षम बनाती है, जिससे एक समृद्ध और विविधता पूर्ण संगीत के अनुभव में वृद्धि होती है। विश्व की विविध संस्कृतियों के संगीत का परिचय प्राप्त होता है। देश-देशान्तर में प्रचलित धुनों को हम सुनते हैं तथा संगीत का विद्यार्थी विविध स्वर प्रयोग सीखता है। इससे वैश्विक सहयोग की भावना उत्पन्न होती है।

(iv) खर्चों में कमी- पारंपरिक संगीत शिक्षा की तुलना में दूरस्थ शिक्षा प्रणाली अधिक किफायती होती है। आने जाने में लगने वाला किराया, आवास व समय का लगना आदि की बचत होती है। आर्थिक समस्याओं से जूझने वाले विद्यार्थी अपना काम करते हुए भी समय निकाल कर इस माध्यम से संगीत सीख सकते हैं।

@2024 International Council for Education Research and Training
ISSN: 2959-1376
2024, Vol. 03, Issue 01, 196-209
DOI: https://doi.org/10.59231/SARI7665

(v) आत्म-अभिव्यक्ति को प्रोत्साहित करना- जो विद्यार्थी मंच पर संगीत प्रदर्शन करने से डरते हैं व घवराते हैं आनलाइन माध्यम में आत्मविश्वास के साथ प्रदर्शन करते हैं। इसमें सफल होने पर वे एक दिन स्टेज पर भी परफॉर्म करने लगते हैं। दूरस्थ शिक्षा मंच छात्रों को उनकी रचनात्मकता का पता लगाने और उनकी अनूठी संगीत शैली विकसित करने के लिए एक सुरक्षित स्थान प्रदान करता I

(vi) नई तकनीकों से परिचित होना- दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से छात्रों को डिजिटल टूल्स और सॉफ्टवेयर की जानकारी होती है। इससे वे संगीत को नई तकनीकों और शैलियों के साथ प्रयोग करने में सक्षम होते हैं। नई तकनीकों की जानकारी उनके ज्ञान में वृद्धि करती है तथा उनका समय भी बचाती है। आज के युग में स्टेज परफॉर्मेंस के लिए संगीत के विद्यार्थियों को नित नई तकनीक से परिचित होना आवश्यक है।

(vii) घर बैठे ही विश्व की विविध संगीत शैलियों से परिचित होना; जिस घराने अथवा गुरु से शिष्य तालीम हासिल कर रहा है वह उसकी शैली से तो परिचित होगा ही साथ ही वह अन्य शैलियों की विशेषताओं का अध्ययन कर सकता है।

(viii) जनसंख्या के एक बड़े वर्ग तक पहुंच- जहाँ पारम्परिक शिक्षा जनसंख्या के बड़े समूह तक नहीं पहुंच पाती है, वहीं दूरस्थ अथवा मुक्त शिक्षा जनसंख्या के एक बड़े वर्ग से जुड़ी होती है। देश के कोने कोने में जहाँ तक internet की पहुँच है, वहां तक मुक्त शिक्षा अपना काम करती है।

दूरस्थ संगीत शिक्षण में प्रयुक्त उपकरण

दूरस्थ संगीत शिक्षण में प्रयुक्त होने वाले उपकरण किसी भी डिजिटल प्लेटफॉर्म पर हो सकते हैं। कुछ प्रमुख संगीत उपकरण इस प्रकार हैं :

(i) संगीत-वेबसाइट्स और पोर्टल- संगीत से सम्बंधित कई वेबसाइट्स और पोर्टल ऑनलाइन संगीत अभ्यास के लिए सामग्री प्रदान करते हैं। इस तरह के स्रोतों का उपयोग करके छात्र मनचाहे संगीतीय प्रदर्शन देख सकते हैं और संगीत तकनीक की वीडियो देख सकते हैं। संगीत सीखने के लिए इंटरनेट पर कई वेबसाइट और पोर्टल उपलब्ध हैं। ये वेबसाइट और पोर्टल विभिन्न प्रकार के संगीत पाठ्यक्रम, ट्यूटोरियल और संसाधन प्रदान करते हैं। संगीत सिखाने वाली कुछ लोकप्रिय व महत्वपूर्ण वेबसाइट और पोर्टल इस प्रकार हैं :

(a) Skooli- यह एक ऑनलाइन संगीत स्कूल है जो विभिन्न प्रकार के संगीत पाठ्यक्रम प्रदान करता

@2024 International Council for Education Research and Training
ISSN: 2959-1376
2024, Vol. 03, Issue 01, 196-209
DOI: https://doi.org/10.59231/SARI7665

है, जिसमें पियानो, गिटार, सितार और ड्रम आदि शामिल हैं।

(b) Yousician- यह एक मोबाइल ऐप है जो Google Play store पर उपलब्ध है। गिटार प्रशिक्षण के सभी पाठ्यक्रम इसमें सम्मिलित हैं।

(c) Coursera- यह एक ऑनलाइन लर्निंग प्लेटफॉर्म है जो संगीत सिद्धांत, संगीत इतिहास और संगीत रचना सहित विभिन्न संगीत विषयों पर पाठ्यक्रम प्रदान करता है। इस प्लेटफार्म पर संगीत शिक्षण का सर्टिफिकेट भी प्रदान किया जाता है जो व्यवसाय के लिए लाभप्रद है।

(d) edx- यह ऑनलाइन लर्निंग प्लेटफॉर्म है जो संगीत के विभिन्न पहलुओं पर पाठ्यक्रम प्रदान करता है। इस वेबसाइट के माध्यम से अनुभवी संगीतज्ञों द्वारा संगीत का आनलाइन विधिवत् प्रशिक्षण प्राप्त किया जा सकता है। इतालवी ओपेरा, शास्त्रीय संगीत और प्रदर्शन कला की विशिष्ट विशेषताओं जिसमें प्रयुक्त उपकरण और गायन के प्रकार शामिल हैं का प्रशिक्षण प्राप्त किया जा सकता है। ओपेरा में संगीत, नाटक और कहानी कहने के बीच बने संबंधों को हम आसानी से समझ सकते हैं। समय और आज की प्रासंगिकता के माध्यम से ओपेरा प्रदर्शन, गायन मंडली, वाद्ययंत्र और मंच संरचना के पीछे की प्रौद्योगिकियों और नवाचारों को जान सकते हैं।

(e) Justin Guitar- एक ऑनलाइन संगीत पाठ्यक्रम है जो पियानो, गिटार, बास और ड्रम सीखने में आपकी मदद करता है। यह वेबसाइट तथा ऐप के रूप में प्ले स्टोर पर भी उपलब्ध है। यहाँ गिटार सीखने के व्यवस्थित सामग्री है। वेबसाइट के एक पेज पर कहा गया है -

Learn Anywhere, Anytime

★ Learn through your favorite songs from day 1

★ Play-along tracks hand-picked for each stage

★ Bite-sized lessons so you learn at your pace

★ Easy-to-use guitar tuner

★ Structure learning path and interactive exercises

(f) Guitar Tricks- एक ऑनलाइन संगीत पाठ्यक्रम है जो आपको वीडियो ट्यूटोरियल और

@2024 International Council for Education Research and Training
ISSN: 2959-1376
2024, Vol. 03, Issue 01, 196-209
DOI: https://doi.org/10.59231/SARI7665

अन्य संसाधनों के माध्यम से गिटार सीखने में मदद करता है।

(g) Pianote- एक ऑनलाइन संगीत पाठ्यक्रम है जो हमें वीडियो ट्यूटोरियल और अन्य संसाधनों के माध्यम से पियानो सीखने में मदद करता है। कान तथा सिद्धांत शिक्षण के विषय में इस वेबसाइट के एक उद्धरण में कहा गया है-

What is Pianote?

"Pianote is an online platform that offers an organized piano lesson curriculum, artist courses on popular topics, 1000+ songs transcribed note-for-note, and a supportive global community of students and teachers". संगीत सिद्धांत (Musical theory) और कान प्रशिक्षण (Ear-training) के विषय में कहा गया है-

"आपको सर्वश्रेष्ठ संगीतकार बनाने के लिए संगीत सिद्धांत और कान प्रशिक्षण महत्वपूर्ण तत्व हैं। यह पाठ्यक्रम मधुर और लयबद्ध पैटर्न के साथ-साथ लय को समझने पर केंद्रित है। जब संगीत पढ़ने समझने, कान से सुनने और अपना खुद का संगीत बनाने की बात आती है तो ये सभी तत्व शिक्षार्थी की बहुत मदद करते हैं।"

(h) Jamplay- एक ऑनलाइन संगीत पाठ्यक्रम है जो हमें वीडियो ट्यूटोरियल और अन्य संसाधनों के माध्यम से विभिन्न वाद्ययंत्र सीखने में मदद करता है। गिटार शिक्षण के विषय में निम्नलिखित बिन्दुओं को दर्शाया गया है -

- गिटार कौशल आप सीखेंगे
- गिटार पिक कैसे पकड़ें
- हाथ की उचित स्थिति
- गिटार के तार और स्केल
- शीट संगीत पढ़ना
- सरल संगीत सिद्धांत
- Time Signature को समझना
- अच्छे अभ्यास की आदतें स्थापित करना

इन वेबसाइट्स और पोर्टलों का उपयोग करके, शिक्षार्थी अपनी रुचि और कौशल स्तर के अनुसार संगीत सीख सकता है।

इनके अतिरिक्त अन्य अनेक वेबसाइट जैसे Music Theory Online, Music Composition Online, Music Theory Tutorials, Music Composition Tutorials हैं जो संगीत सीखने में शिक्षार्थियों की मदद कर सकते हैं। संगीत सीखने के लिए एक

@2024 International Council for Education Research and Training
ISSN: 2959-1376
2024, Vol. 03, Issue 01, 196-209
DOI: https://doi.org/10.59231/SARI7665

अच्छी जगह खोजने के लिए, अपनी रुचियों और कौशल स्तर पर विचार करना महत्वपूर्ण है। यदि विद्यार्थी एक नए वाद्ययंत्र को सीखना चाहता है, तो संबंधित वेबसाइट या पोर्टल पर उपयुक्त ट्यूटोरियल और सामग्री प्राप्त कर सकता है। संगीत सिद्धांत या संगीत इतिहास सीखने का इच्छुक, उस वेबसाइट या पोर्टल को खोजे जो इन विषयों पर अच्छी सामग्री प्रदान करता है।

वीडियो कॉल- वर्चुअल मीटिंग्स या वीडियो कॉल प्लेटफॉर्म का उपयोग करके शिक्षक और छात्र संगीत की पाठशाला में संपर्क कर सकते हैं। छात्र अपने गुरु के दर्शन और निरीक्षण कर सकते हैं और उन्हें लाइव प्रश्न पूछ सकते हैं। Zoom, Google Meet, Microsoft Teams आदि ऐप्स का उपयोग करके शिक्षक और छात्र संगीत कक्षाओं में जुड़ सकते हैं। इसके माध्यम से छात्र अपने गुरु के साथ आराम से संगीत की कोचिंग प्राप्त कर सकते हैं और वीडियो कॉल के जरिए मूल्यांकन और प्रश्नोत्तरी भी कर सकते हैं।

शॉर्ट वीडियो सामग्री- छात्रों के लिए शॉर्ट वीडियो के माध्यम से संगीत की पाठशाला तैयार की जा सकती है। ये वीडियो संगीत आवाज़ की तकनीक, संगीतीय स्केल, राग और ताल के बारे में शिक्षा प्रदान कर सकते हैं। संगीत सीखने सम्बन्धी ICT Tools: इंटरैक्टिव टूल्स के माध्यम से, छात्र संगीतीय स्केल, राग और ताल के विभिन्न पहलुओं का अभ्यास कर सकते हैं। इसके साथ ही, इंटरैक्टिव टूल्स संगीत आवाज़ को समझने और संगीतीय शब्दावली को समझने के लिए भी मदद कर सकते हैं।

1. वीडियो और ऑडियो शेयरिंग ऐप्स- Google Drive, Dropbox, OneDrive, SoundCloud आदि ऐप्स का उपयोग करके छात्र और शिक्षक संगीत का ऑडियो और वीडियो सामग्री आपस में साझा कर सकते हैं। इसी तरह छात्र अपने संगीतीय प्रदर्शन का वीडियो शेयर कर सकते हैं और शिक्षक संगीत को संशोधित करने और प्रतिक्रिया देने के लिए विपणित कर सकते हैं।

2. शार्ट वीडियो सामग्री साझा करने के प्रदाता : छात्र और शिक्षक Starmaker, TikTok, Instagram, Reels, YouTube Shorts, आदि शार्ट वीडियो प्लेटफॉर्म का उपयोग करके संगीत के संबंधित ट्यूटोरियल, प्रयोग, और प्रदर्शनियों को उपयोगकर्ताओं के साथ साझा कर सकते हैं।

3. संगीत रियाज हेतु ICT Tools: संगीत शिक्षा के लिए कई ऐप्स उपलब्ध हैं, जैसे कि Simply Piano, Yousician, Smule आदि। Ishala app के साथ रागदारी संगीत का अभ्यास कर सकते हैं।

@2024 International Council for Education Research and Training
ISSN: 2959-1376
2024, Vol. 03, Issue 01, 196-209
DOI: https://doi.org/10.59231/SARI7665

4. ऑनलाइन संगीत शिक्षा पोर्टलः इंटरनेट पर कई ऑनलाइन संगीत शिक्षा पोर्टल हैं जहां छात्र संगीत अभ्यास, वीडियोज़ देखकर प्रदर्शन देखकर और आत्ममूल्यांकन करके अपनी कला कौशल को सुधार सकते हैं।

ये उपकरण दूरस्थ संगीत शिक्षा के लिए मददगार हो सकते हैं और छात्रों को संगीतीय क्षेत्र में स्वतंत्रता और सुविधा प्रदान करते हैं।

संगीत में दूरस्थ शिक्षा प्रणाली की चुनौतियां

संगीत में दूरस्थ शिक्षा एक अत्यंत महत्वपूर्ण उपकरण है जो विशाल जनसंख्या को शिक्षा तक पहुंच प्रदान करता है। लेकिन, संगीत जैसे विषयों में इसे लागू करना अपने आप में एक चुनौती है। भारत में रागदारी संगीत प्रचलित है। प्रत्येक राग का स्वतंत्र व्यक्तित्व होता है जो उसे अन्य रागों से अलग करता है। इसी प्रकार वाद्य वादन की तकनीक तथा हाथ का रखरखाव योग्य गुरु के निर्देशन तथा संरक्षण में ही सम्भव है। संगीत शिक्षण की पाठ्य योजना भी एक महत्वपूर्ण तत्व है। संगीत में दूरस्थ शिक्षा प्रणाली की कुछ मुख्य चुनौतियाँ इस प्रकार हैं-

(i) प्रावधान मानक- संगीत के लिए दूरस्थ शिक्षा तक पहुंचने के लिए छात्रों को उच्च गुणवत्ता वाले उपकरणों और तकनीकी संरचनाओं की आवश्यकता होती है, जिसे सभी छात्रों तक पहुंचाना संभव नहीं हो पाता है। दूरस्थ शिक्षा प्रणाली प्रौद्योगिकी पर निर्भर करती है। छात्रों की अच्छी गुणवत्ता वाले इंटरनेट कनेक्शन और उपकरणों तक पहुंच होना आवश्यक है। ख़राब इंटरनेट कनेक्टिविटी के कारण आडियो विडियो का गायब हो जाना, हर थोड़े समय बाद इस तरह का व्यवधान उत्पन्न होने पर छात्र की एकाग्रता भंग हो जाती है और शिक्षण अवरुद्ध हो जाता है।

(ii) व्यक्तिगत ध्यान- संगीत शिक्षा में एक-एक छात्र के साथ व्यक्तिगत रूप से ध्यान देना बहुत जरूरी है, जो दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से संभव नहीं हो सकता है। संगीत का अभ्यास एक बहुत ही व्यक्तिगत और संवादात्मक प्रक्रिया होती है। वीडियो कॉन्फ्रेंस के माध्यम से हर विद्यार्थी की गायकी को सुनना बहुत ही कठिन हो जाता है। एक-एक विद्यार्थी पर ध्यान देना मुश्किल हो जाता है। कभी तकनीकी समस्या तथा कभी Internet connectivity की समस्या सामने आ जाती है। इससे एकाग्रता में कमी आती है। इसमें शिक्षक अनुदेशक के रूप में कार्य करता है इस कारण श्रद्धा नामक दिव्य गुण की इस प्रणाली में कमी रहती है।

@2024 International Council for Education Research and Training 2024, Vol. 03, Issue 01, 196-209
ISSN: 2959-1376 DOI: https://doi.org/10.59231/SARI7665

(iii) संगठन की समस्या- संगीत शिक्षा में समूह में सामंजस्य और समन्वय आवश्यक होता है, जो दूरस्थ शिक्षा में सम्भव नहीं हो पाता है। संगीत एक सामाजिक कला है। विद्यार्थी जो कुछ सीख चुका है उसका आपस में सुनाना अथवा प्रदर्शन करना आवश्यक है। समूह गायन के द्वारा छात्र/छात्राओं में परस्पर सद्भाव उत्पन्न होता है जो दूरस्थ शिक्षण द्वारा सम्भव नहीं है। संगीत के विद्यार्थियों में सामाजिक सद्भाव तथा समूह में कला प्रस्तुि की क्षमता विकसित होनी चाहिए। इस प्रकार दूरस्थ शिक्षण द्वारा इन गुणों को विकसित करने में बहुत कठिनाई आती है।

(iv) आत्मकेंद्रीकरण की समस्या- वास्तविक दुनिया से दूर रहने तथा शारीरिक रूप से उपस्थित न होने के कारण बच्चे एकांतप्रिय होने लगते हैं। स्वयं में ही खोये रहने से उनका सामाजिक विकास सही तरह से नहीं हो पाता है। यह शिक्षण युवा वयस्कों के लिए उन्हें वास्तविक दुनिया में ढालने में बहुत कम योगदान देता है। पीढ़ी Y और Z बहुत शर्मीले और एकांतप्रिय हैं और अपने बड़ों पर भरोसा नहीं करते। शर्मीले तथा एकांतप्रिय होने के कारण वे नहीं बोल पाते हैं तथा शर्म महसूस करते हैं। युवाओं का मिलनसार होना, सार्वजनिक रूप से बोलने में आत्मविश्वासी होना, बहस के लिए खुला रहना और विपरीत विचारों को समझना सीखना होगा ।

समस्याओं के निराकरण सम्बन्धी सुझाव

आनलाइन शिक्षण में छात्रों में स्वतः स्फूर्त प्रेरणा को जाग्रत करना चाहिए। ऑनलाइन सीखते समय छात्रों में स्वसंयम तथा स्वानुशासन जाग्रत करने के कुछ टिप्स इस प्रकार हैं-

1. संगीत के अपने साथी छात्रों के साथ समूह बनाएं और ऑनलाइन सत्रों के माध्यम से सप्ताह में कम से कम एक बार एकत्र हों।

2. प्रतिदिन सक्रिय रूप से समकालीन संगीत की विभिन्न शैलियों को सुनकर नवीनतम संगीत से अपडेट रहें। सीखा गया एक गाना छात्रों को प्रेरित करेगा और उनको आत्मविश्वास से भर देगा।

3. एक बार कोई गीत या तकनीक सीख लेने के पश्चात उसे कक्षा के बाहर प्रदर्शित करने का प्रयास करें। उदाहरण के लिए यदि आपने संगीत तैयार करते समय किसी गीत को मिश्रित करना सीख लिया है, तो आप इसे एक प्रोजेक्ट के रूप में स्वयं कर सकते हैं।

4. अपनी प्रगति पर कुछ प्रतिक्रिया प्राप्त करने के साथ-साथ अपने नए सीखे गए कौशल को

@2024 International Council for Education Research and Training
ISSN: 2959-1376
2024, Vol. 03, Issue 01, 196-209
DOI: https://doi.org/10.59231/SARI7665

प्रदर्शित करने के संकोच को दूर करने के लिए सबसे पहले दोस्तों और परिवार के साथ ऑनलाइन संगीत कार्यक्रम दें। छात्रों के साथ व्यक्तिगत नियमित चेक-इन, वर्चुअल स्टेज का निर्माण करना जहां छात्र अपने प्रदर्शन को साझा कर सकें, और ऑनलाइन समुदायों को बढ़ावा देना शिक्षक तथा छात्रों के भावनात्मक अंतर को दूर कर सकता है। अपनी उपलब्धियों को स्वीकार करने और उनकी खुशी मनाने से, शिक्षक छात्रों को और जुड़ा हुआ महसूस करा सकते हैं, भले ही उनके बीच की दूरी कितनी भी हो।

निष्कर्ष

संगीत शिक्षण की दूरस्थ शिक्षा में महत्वाकांक्षी संगीतकारों के सीखने और बढ़ने के तरीके में क्रांतिकारी बदलाव लाने की क्षमता है। दूरस्थ शिक्षा गुणवत्तापूर्ण शिक्षा को लोकतांत्रिक बनाकर, रचनात्मकता और सहयोग को बढ़ावा देकर, और एक लचीला शिक्षण वातावरण प्रदान करके, व्यक्तियों की भौगोलिक स्थिति या व्यक्तिगत परिस्थितियों की परवाह किए बिना उनके संगीत सीखने के सपनों को पूरा करने के लिए सशक्त बनाती है। संगीत शिक्षा में दूरस्थ शिक्षा की सफलता और प्रभावशीलता सुनिश्चित करने के लिए तकनीकी सीमाओं और भौतिक संपर्क की आवश्यकता जैसी चुनौतियों का समाधान खोजना महत्वपूर्ण है। इस सामंजस्यपूर्ण क्रांति को अपनाने से आने वाली पीढ़ियों के लिए संगीत शिक्षण की संभावनाओं की दुनिया के दरवाजे खुल जाएंगे।

संगीत शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें संगीत के विभिन्न पहलुओं जैसे कि सिद्धांत, इतिहास, वादन, गायन और नृत्य की शिक्षा दी जाती है। दूरस्थ शिक्षा प्रणाली संगीत शिक्षा को अधिक सुलभ और पहुंच योग्य बनाने का एक तरीका है। यह उन लोगों के लिए संगीत सीखने का अवसर प्रदान करता है जो शारीरिक रूप से संगीत विद्यालयों या प्रतिष्ठानों तक पहुंचने में असमर्थ हैं।

संगीत शिक्षा में दूरस्थ शिक्षा प्रणाली एक मूल्यवान उपकरण है जो संगीत शिक्षा को अधिक सुलभ और पहुंच योग्य बनाता है। इस प्रणाली में कुछ चुनौतियां भी हैं, जिन्हें दूरस्थ शिक्षा प्रदाताओं द्वारा दूर करने की आवश्यकता है।

दूरस्थ शिक्षा प्रणाली की सफलता के लिए निम्नलिखित बातों पर ध्यान देना महत्वपूर्ण हैः दूरस्थ शिक्षा प्रणाली में छात्रों के लिए उच्च गुणवत्ता वाली सामग्री और संसाधन उपलब्ध होना आवश्यक है।

@2024 International Council for Education Research and Training
ISSN: 2959-1376
2024, Vol. 03, Issue 01, 196-209
DOI: https://doi.org/10.59231/SARI7665

इसमें पाठ, वीडियो, ऑडियो और अन्य संसाधन शामिल हो सकते हैं।

दूरस्थ शिक्षा प्रणाली में प्रभावी शिक्षण और मूल्यांकन रणनीतियां आवश्यक हैं। इन रणनीतियों को छात्रों को सीखने और प्रगति करने के लिए प्रेरित करने के लिए डिज़ाइन किया जाना चाहिए। दूरस्थ शिक्षा प्रणाली में छात्रों का फीडबैक लेना आवश्यक है।

दूरस्थ शिक्षा पाठ्यक्रमों की योजना बनाना और डिज़ाइन करना भी एक आवश्यक पहलू है। दूरस्थ शिक्षा सत्रों का आयोजन और संरचना करना तथा आभासी कक्षाओं में जुड़ाव और बातचीत द्वारा सम्पर्क आवश्यक है।

सन्दर्भ-सूची

1. गुप्ता, बकक, & सिंह, र. भारतीय प्राचीन एवं आधुनिक शिक्षा प्रणाली: एक गहन अध्ययन. (2021). *Scholarly Research Journal For Humanity Science and English Language*, *9*(47), 11463–11468. https://doi.org/10.21922/srjhsel.v9i47.7685
2. ShodhKosh. (n.d.). *Journal of Visual and Performing Arts*. https://wwww.granthaalayahpublication.org/Arts-Journal/ShodhKosh/neelam-paul
3. https://www.granthaalayahpublication.org/Arts-Journal/ShodhKosh/neelam-paul-
4. यमन, ए.के. (2011). *रेडियो और संगीत कनिष्क पब्लिशर्स, डिस्ट्रिब्यूटर्स.*
5. पाठक, आर. पी. (2011). *शैक्षिक प्रौद्योगिकी पियर्सन एजूकेशन इंडिया. कुलश्रेष्ठ, एस.* (2020). भारत में प्रिंट, इलेक्ट्रॉनिक और न्यू मीडिया प्रभात प्रकाशन Pvt ltd.
6. गौतम, ए. (2002). *भारतीय संगीत में वैज्ञानिक उपकरणों का प्रयोग. कनिष्क पब्लिशर्स, डिस्ट्रीब्यूटर्स.*
7. Blake, J. N. (2018). Distance learning music education. *Journal of Online Higher Education*, *2*(3), 1–23.
8. Maki, J. (2001). *Is it possible to teach music in a classroom from a distance of 1000 km? Learning environment of music education using ISDN-video conferencing. Distributed by ERIC clearinghouse*.

@2024 International Council for Education Research and Training
ISSN: 2959-1376
2024, Vol. 03, Issue 01, 196-209
DOI: https://doi.org/10.59231/SARI7665

9. Upadhyay, D., & Joshi, N. (2017). A critical analysis of teaching of Indian classical music through distance learning systems in higher education. *International Journal of Research - GRANTHAALAYAH*, *5*(2), 225–232. https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v5.i2.2017.1727
10. शर्मा, टी. (2021). *भारतीय संगीत में दूरस्थ शिक्षा प्रणाली का महत्व एवं औचित्य. जयपुर——; राजा पब्लिशिंग हाउस.*-
11. Viz, R. (2014). संगीत शिक्षण में श्रव्य दृश्य साधनों का उपयोग. *Swar Sindhu*, *2*(4), 41–47. https://doi.org/10.33913/ss.v02i04a06https.org/10.29121/granthaalayah.v5.i2.2017.1727
12. https://www.ugc.gov.in/-
13. Admin. (2021, November 24). *Nios Books – Free download nios Books. BYJUS*. https://byjus.com/nios/nios-books/
14. Upadhyay, D., & Joshi, N. (2017). A critical analysis of teaching of Indian classical music through distance learning system in higher education. *International Journal of Research - GRANTHAALAYAH*, 5(2), 225–232. https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v5.i2.2017.1727
15. Agarwal, R. (2023). Use of technology by higher education students. *Shodh Sari-An International Multidisciplinary Journal*, *02*(4), 152–161. https://doi.org/10.59231/SARI7631
16. Yadav, M. K. (2023). Rehabilitation through dance therapy. *Shodh Sari-An International Multidisciplinary Journal*, *02*(4), 60–72. https://doi.org/10.59231/SARI7624

Received on Oct 26, 2023

Accepted on Nov 26, 2023

Published on Jan 01, 2024